इतिहास के स्रोतों से...

अबु अब्दुल्ला मोहम्मद इब्न बतूता

प्रस्तुतिः जितेन्द्र कुमार

बतूता का जूता

इब्न बतूता पहन के जूता
निकल पड़े तूफान में
थोड़ी हवा नाक में घुस गई
घुस गई थोड़ी कान में।

कभी नाक को, कभी कान को
मलते इब्न बतूता,
इसी बीच में निकल पड़ा
उनके पैरों का जूता।

उड़ते-उड़ते जूता उनका
जा पहुँचा जापान में
इब्न बतूता खड़े रह गए
मोची की दूकान में!

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

...इब्न बतूता जूता पहन के जो निकला तो दुनिया के कई देशों में घूमा। 30 सालों में उसने कोई एक लाख बीस हज़ार सात सौ पचास किलोमीटर का सफर तय किया। तुम सोच रहे होगे यह इब्न बतूता और उसके जूते का मामला क्या है? वो रहता कहाँ था? कहाँ से चला था? कहाँ के लिए, कब...?

इब्न बतूता का सफरनामा

700 साल पहले 24 फरवरी, 1304 ईस्वीं में अफ्रीका के मोरक्को देश के तांजीर नाम की जगह में इब्न बतूता का जन्म हुआ।

1325 ईस्वीं में 14 जून के दिन उसने अपनी यात्रा तांजीर से शुरू की। तब वह 21 वर्ष का था। वह मोरक्को से लेकर मिस्र, दमिश्क, सीरिया, ईराक, ईरान, अफगानिस्तान, भारत, श्रीलंका, सुमात्रा, जावा और चीन तक घूमा। बाद में वह स्पेन भी गया। उसने अपनी ज़िन्दगी के 30 साल घूमते-फिरते बिताए। उस समय न कोई मोटर-गाड़ी थी न रेल। इब्न बतूता ने अपनी यात्राएँ घोड़ों, ऊँटों व पानी के जहाज़ों से की।

एक किताबः रेहला

तुम सोच रहे होगे कि हम इब्न बतूता के बारे में इतनी बातें कैसे जानते हैं? दिन, तारीखें, देश सब कुछ। यह सब जानकारी हमें इब्न बतूता की किताब *रेहला* (मशहूर यात्राएँ) से मिली है। *रेहला* को बतूता ने लिखवाया था।

बतूता हिन्दुस्तान में

बतूता भारत में लगभग 13 साल रहा। वो जब भारत आया तब यहाँ सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक का शासन काल था। उसने भारत के अपने अनुभवों के बारे में विस्तार से लिखा है। इब्न बतूता बताता हैः

जब मैं हिन्दुस्तान आया मैंने देखा कि यहाँ एक साधारण-सी बात भी बड़ी तेज़ी से सुलतान तक पहुँचाई जाती थी। यहाँ खबरें पहुँचाने के लिए दो तरह के डाकिए होते थे जिन्हें बारिद कहा जाता था। एक तरह के डाकिए घोड़ों पर जाया करते थे। उनके घोड़े बहुत तेज़ दौड़ते थे। 4 कोस के बाद वे अपने घोड़े बदल देते थे ताकि समाचार तेज़ी से पहुँचाया जा सके। दूसरे डाकिए पैदल जाने वाले होते थे। वे एक हाथ में एक लम्बा डण्डा रखते थे जिस पर घण्टियाँ बँधी होती थीं। एक हाथ में चिट्ठी और एक हाथ में डण्डा लेकर डाकिए तीन मील तक तेज़ी से दौड़ते। वहाँ खड़ा हुआ डाकिया घण्टी की आवाज़ सुनकर तैयार हो जाता। चिट्ठी पाते ही अगले डाकिए तक उसे पहुँचाने के लिए वह भी तेज़ी से दौड़ जाता। यही क्रिया चलती रहती और पत्र निश्चित स्थान तक पहुँच जाता।

जब मुलतान से बतूता का काफिला दिल्ली आ रहा था तो रास्ते में मिलने वाले भोजन के बारे में बतूता बताता है:

पहले रोटियाँ लाई जाती थीं जो बहुत पतली होती थीं। एक भेड़ के चार-छह टुकड़े किए जाते थे। फिर भुने माँस के बड़े-बड़े टुकड़े सब के सामने रखे जाते। घी में तली हुई रोटियाँ लाई जाती थीं। ये हमारे देश की उन रोटियों जैसी होतीं जिन्हें मुश्रक कहते हैं। इनके बीच में हलवा साबुनी भरा जाता था। हर रोटी के टुकड़े पर एक मीठी रोटी रखी जाती जिसे खिश्ती कहते हैं। यह आटे, शक्कर और घी से बनती है। फिर एक चीज़ लाई जाती जिसे वे समोसा कहते हैं। इन समोसों में कीमा किया हुआ माँस भरा होता है। सभी के सामने 4 या 5 समोसे रखे जाते हैं। इसके बाद घी में तले हुए चावल लाए जाते हैं जिनके ऊपर भुना हुआ मुर्गा रखा जाता है। भोजन के बाद फुक्का पिलाया जाता है। यह जौं का पानी होता है। इसे भोजन पचाने के लिए तैयार किया जाता था।*

भारत में इब्न बतूता ने एक बार सती की घटना देखी। बतूता कहता है:

हिन्दुस्तान में मैंने देखा कि कई औरतों को उनके पति की मृत्यु के बाद ज़िन्दा जला दिया जाता है। ये औरतें कीमती कपड़े पहनकर घोड़े पर बैठकर जाती थीं। उसके पीछे हिन्दू और मुसलमान होते थे। आगे नक्कारे और नौबत बजती थी। लेकिन राज्य में विधवा को जलाने के लिए सुलतान से आज्ञा लेनी पड़ती है।

एक दफा सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक ने बतूता को योगियों का करतब देखने के लिए दरबार में बुलाया। दो योगी उसके पास रजाई ओढ़े बैठे थे। सुलतान ने एक योगी से कहा, "यह अजीज़ यहाँ बड़ी दूर से आया है। इसे ऐसे कुछ करतब दिखाओ जो इसने पहले कभी न देखे हों।" उसने कहा "अच्छा" और आलती-पालती मारकर बैठ गया। फिर बैठे-बैठे ही हवा में बहुत ऊपर उठ गया। यह देख इब्न बतूता बेहोश हो गया और इतना घबरा गया कि बीमार हो गया।

बतूता बताता है:

सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक न्याय प्रिय शासक था। एक बार किसी मालिक के एक बच्चे ने सुलतान के विरुद्ध दावा किया कि सुलतान ने उसे बेवजह पीटा है। मामला काज़ी के सामने पेश हुआ। काज़ी ने फैसला सुनाया कि सुलतान बच्चे को धन देकर सन्तुष्ट करे। यदि वह स्वीकार न करे तो बच्चा सुलतान को पीटे। मैं उस दिन वहीं उपस्थित था। सुलतान दरबार में आया। उसने बच्चे के हाथ में छड़ी दी और कहा, "तू मुझे वैसे ही पीट जैसे मैंने तुझे पीटा था।" बच्चे ने सुलतान को 21 छड़ियाँ मारीं। यहाँ तक कि एक बार उसके सिर से टोपी भी गिर गई।

इब्न बतूता को लोगों से मिलने-जुलने का बड़ा शौक था। स्वभाव से वह बड़ा खर्चीला था। उसने कई शादियाँ कीं। चीन जाने से पहले उसने भारत के कई शहरों की सैर की। वह दक्षिण भारत भी गया। वह बताता है कि, "मैं यहाँ तीन साल ठहरा किन्तु मुझे रोटी खाने को कभी न मिली। यहाँ लोग सिर्फ चावल खाते थे और मैं चावल केवल पानी की सहायता से ही निगल सकता था।"

भारत में समय बिताने के बाद वो चीन गया फिर वहाँ से मक्का, मिस्र, टयूनिश आदि देश होता हुआ वापिस मोरक्को पहुँचा। वहाँ उसने अपनी किताब *रेहला* लिखवाई। यह किताब अरबी में लिखी गई है। 1369 ईस्वीं में इब्न बतूता की मृत्यु हो गई। लेकिन *रेहला* ने इब्न बतूता को अमर बना दिया।

*अलीगढ़ में हलवा साबुनी अब भी बहुत बिकता है।